अड़ोस-पड़ोस परियोजना

राहुल श्रीवास्तव

अड़ोस-पड़ोस परियोजना एक सरल शैक्षणिक प्रणाली है जो ऐसे तरीकों पर आधारित है जिनसे भारतीय स्कूलों और कॉलेजों के अनेक शिक्षक परिचित हैं। प्रसिद्ध एकलव्य परियोजना एक महत्वपूर्ण प्रेरणा रही है। वह पहल, पथप्रदर्शकों में से एक रही है जिसकी वजह से स्थानीय जगहों को एक ऐसा सघन शैक्षिक साधन बनाया जा सकता है जो संबंध स्थापित करने और साथ ही साथ स्थानीय,क्षेत्रीय,राष्ट्रीय और वैश्विक दुनिया के बारे में और अधिक सीखने मे सहायक संदर्भ बन सकता है.

अपने भवनों, घरों और मुहल्लों-इलाकों का इतिहास और जातिगत जानकारी एकत्रित करने के लिए अड़ोस-पड़ोस परियोजना छात्रों की मदद करती है। इस तरह ऐतिहासिक जानकारी इकट्ठी करके छात्र स्थानीय निवासी या फिर राष्ट्रीय नागरिक होने के नाते खुद की पहचान और सम्बन्धों को समझ सकते हैं। इस तरह वे अपने शहरों की सांस्कृतिक-राजनीतिक स्थिति से अपना रिश्ता बना सकते हैं और अपनी सदस्यता के बारे में प्रासंगिक प्रश्न पूछ सकते हैं।

विल्सन कालेज में मैं इस योजना का 'पुकार' (पार्टनर्स फॉर अरबन नॉलेज) में सहयोगी था। पुकार मुंबई में एक अनुसन्धान संस्थान है। मैंने देखा कि वहाँ सबसे ज्यादा चर्चा, खींचा-तानी और बहस 'विरासत' पर होती थी।

शुरुआत में विरासत शब्द का उपयोग हमने एक कडे रूप में, वास्तु-शिल्प में एक रूपरेखा और कंकरीट की तरह ठोस किया था। 168 वर्ष पहले स्थापित विल्सन कालेज एक विरासती भवन है। विल्सन कालेज के अधिकांश छात्र फोर्ट, कालबादेवी, गिरगांव, मुहमद अली मार्ग, डोंगरी जैसे क्षेत्रों में रहते हैं जो हेरिटेज क्षेत्र है। अगर इन्हें अभी तक हेरिटेज क्षेत्र घोषित नहीं किया गया है तो कर दिया जाना चहिए। परियोजना के शुरुआती दौर में छात्रों ने इन स्थानों की तस्वीरें

खींची, यहाँ का इतिहास लिखा और अपने आवासों को जरा और ज्यादा आश्वस्त हो कर देखा।

लेकिन जैसे ही इस परिकल्पना को इमारतों से विलग कर व्यक्तियों, परिवारों, इमारतों और मुहल्लों के इतिहास, उनकी जीवनियों से जोड़ा जाने लगा वैसे ही वह जैसे बदलनेसी लगी। विरासत के मायने ही बदल गए। अब इसके मायने हो गए, शहरी स्थान में भीतर एक ऐसी विशिष्ट शैली में जीना, जिसमें अपने इतिहास को तीव्रता से याद रखा जाता है। एक ऐसी शैली जिसमें कारखाने, चालियां (मुंबई की खास ढंग से बनी इमारतें) ऊँचे-ऊँचे भवन, दुकान, दफ्तर और बन्दरगाह सब इसकी सीमाओं में शामिल हो जाते हैं और छात्रों की अपनी जिंदगियां शहर से जुड़ने के तरीकों को समझने के लिए मुख्य केंद्रीय बात बन जाती हैं। परियोजना को यह पक्का यकीन होने लगा कि शहरी स्थान का मतलब इमारतें, गली, सड़कें और घर जैसी ठोस वस्तुएं तो होती ही हैं साथ ही उनमें रहने बसने का अनुभव भी होता है, जिसमें यांदे, कल्पित इतिहास और सांस्कृतिक प्रतीक जुड़े हुए होते हैं।

चूंकि इस परियोजना की मुख्य परिकल्पना विरासत पर केंद्रित थी इसलिए सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह बन गया कि 'विरासत' में गैर-भौतिक क्या क्या बाते शामिल होती हैं? राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और प्रतीकी संसार के एक हिस्से के तौर पर विरासत पर गहरी छान-बीन शुरू होने लगी।

महत्वपूर्ण प्रश्न पूछे जाने लगे। मुंबई शहर, मराठी भाषा और बाद में हिन्दू धर्म के संदर्भ में एक तरह की सांकेतिक विरासत कैसे बन गया? इसका उन लोगों पर क्या असर पड़ा जो मराठी और हिंदू दोनों नहीं थे? मुंबई नगर की आज की राजनीति के संदर्भ में शहर से उनके रिश्ते कैसे समझे जा सकते हैं? मुंबई नगर की विरासत और इतिहास का इतना आंतरिक हिस्सा होते हुए भी वे आज के संदर्भ में सांस्कृतिक तौर पर अनुपयुक्त व्यक्ति कैसे माने जाने लगे?

हाल के दिनों में शहरी स्थानों की हमारी समझ को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसा मुख्यतया शहरों में जातीय टकराव को लेकर हुआ है। सामाजिक असमानताओं, शहरी योजना की गैर-मौजूदगी और मुख्य तौर पर नागरिकों का जान-बूझकर किया गया राजनैतिक इस्तेमाल जैसे संदर्भ में उन्हें समझाया जा सकता है लेकिन एक बात जो स्पष्ट रूप से समझ में नहीं आती वह यहभी - कुछ आम शहरी नागरिक ऐसे सामूहिक हत्याकांडो का हिस्सा कैसे बन जाते हैं? कैसे ये लोग इन जानी-पहचानी जगहों को युद्ध क्षेत्र और दुखद स्थानों में बदल देते हैं?

जही ये सवाल अभी भी पहेलीसे लगते हैं और इन पर चर्चाएं होती है और इनके जटिल अध्ययनों की जरूरत है। अड़ोस-पड़ोस परियोजना ने अपने तजुर्बों से एक ऐसी अभिधारणा पेश की है जिससे विरासत की अवधारणा को ज्यादा स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

1991-92 में हुए दंगों ने मुंबई शहर का अंग-भंग कर दिया था। लगभग पाँच साल तक छात्रों के साथ हुई बातचीत से एक बात समझ में आई - शहरी स्थान जाने -पहचाने स्थल-से लगते हैं, और ऐसे भ्रामक रूप से परिचित जगहों पर प्रचार-प्रसार और अफवाहें फैलाना आसान हो जाता है। दंगों में इन तत्वों ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

जब मुंबई में दंगे हुए तब इन छात्रों की उम्र आठ और तेरह साल के बीच थी और उन्हें वे घटनाएं अच्छी तरह याद थीं। इनमें से अधिकांश गिरगांव,मुहम्मद अली रोड जैसे पुराने शहर के क्षेत्रों से थे। यह क्षेत्र ज्यादा अशांत ,अधिक अस्थिर थे और कुछ छात्रों की दंगों में

भागीदारी भी रही थी। ये छात्र समझते थे कि वे अपने क्षेत्रों को भली-भांति जानते हैं। वे उन क्षेत्रों से परिचित न थे जिन्हें भिन्न या दूसरा संसार माना जाता है। यह बात लड़कियों पर ज्यादा लागू होती है। उनके आने-जाने पर पाबन्दियां लगी होती हैं। शहर की सामाजिकी और इतिहास के बारे में उनकी कल्पना वास्तविक अनुभव से एकदम अलग थी।

अनेक मुलाकातों के दौरान एक-दूसरे के पड़ोस में घटी घटनाओं पर चर्चाएं हुईं। एक -दूसरे को अपने इलाकों में आमंत्रित भी किया गया। अपनी शहरी पहचान को फिर से खोज निकालकर सब बेहद उत्साहित थे। इस दौरान अन्य शहरों, देशों को पहचानने, उनका इतिहास समझने की इच्छा जागृत हुई। अपने शहर के बाहर बसे ग्रामीण और शहरी संसार को समझने की इच्छा ने जन्म लिया। इस तरह इन छात्रों ने खुद को पहचाना और मुंबई से अपने रिश्ते को समझा।

इस विशेष संदर्भ में महत्वपूर्ण बात यह है कि अनेक टिप्पणियों में ध्यान दिलाया गया है कि स्थानीय जगहों को सामान्य समझकर इनके प्रति लापरवाह नहीं रहा जा सकता हैं। वे बड़ी नाजुक और संवेदनशील होती हैं और उन पर उसी तरह काम करना जरूरी है जैसे राष्ट्रीय सीमाओं पर।

इस परियोजना के लिए अर्जुन अप्पादुराई का निबन्ध 'इलाके का विकास' एक महत्वपूर्ण संदर्भ लेख है। आम तौर पर राष्ट्रीय सीमाओं को ही नाजुक समझा जाता है। सीमाओं पर चौकसी बढ़ा दी जाती है। इसके परिणामस्वरूप नागरिकों में भावनात्मक विचार उकसाए जाते हैं। स्थानीय इलाकों और गरीबी और असमानताओं के चलते प्रांतीय और राष्ट्रीय स्तर पर राजनैतिक हिंसात्मक स्थितियां समय समय पर भयंकर सामूहिक हत्याकांडों की शिकार हो जाती हैं। यह एक सच्चाई है कि स्थानीय इलाकों में भी शांति बनाए रखना जरूरी है। इस तरह राष्ट्रीय मान-सम्मान स्थापित किया जा सकता है। हाल ही में हुई हिंसा जैसी स्थितियों से बचने के लिए जरूरी है कि एक दूसरे के इतिहास, उनके जीवन के बारे में जाना जाए ताकि अलगाववाद, पराएपन से बचा जा सके।

जैसा कि हमने आरम्भ में ही कहा शहरी वातावरण प्राकृतिक और काल्पनिक तत्वों के समझदार मिश्रण से बनता है।

अनेक जटिल तरीकों से लोगों में संबंधित होने की भावना बनाए रखने के लिए जीवनी, पारिवारिक इतिहास और इलाका या मुहल्ला महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विरासत की धारणा को बनाए रखने के लिए एक ही आयाम लोगों को एक-दूसरे से जोड़ने के लिए उतना उचित नहीं माना जा सकता है। अन्ततः विरासत की कल्पना करने के लिए यह समझना जरूरी है कि लोग उसके बारे में क्या-कैसे लिखते हैं, उसका निर्माण कैसे करते हैं। इन काल्पनिक संसारों को समझने के लिए 'अड़ोस-पड़ोस परियोजना' एक सोचा समझा राजनैतिक कार्यक्रम चलाती है। जहाँ तक सम्भव हो लोगों और उनकी जीवनियों और कहानियों को मद्देनजर रख कर ऐसा करना चहिए।

इस परियोजना में हिस्सा लेने के बाद विल्सन कालेज के छात्रों का कालेज और अपने पड़ोस के प्रति नजरिया ही बदल गया। महत्वपूर्ण है कि ज्यादातर छात्र पुराने मुंबई शहर के निवासी हैं।

इन छात्रों को कभी आधुनिक मुंबई ने स्वीकार नहीं किया। उन्हें अपना पता बताने में शर्म आती थी। यह बताने में कि वे डोंगरी या गिरगांव में रहते हैं वे झिझकते थे। लेकिन उनमें से अनेक छात्रों ने अपने इलाकों

के इतिहास की छान-बीन की और इस जानकारी में साझेदारी करके उन्हें गर्व महसूस हुआ।

ब्रितानी शासन के दौरान विल्सन कालेज को स्काटलैंड का संरक्षण प्राप्त था। प्रशासन ऐसे छात्रों का स्वागत करता था जो ऐसे मध्यवर्गीय परिवारों से आते थे जिनके परिवार अंग्रेजी नहीं जानते थे। स्वतंत्रता संग्रामियों के बच्चों का भी स्वागत होता था। अधिकतर छात्र उन्हीं इलाकों के थे जहाँ से आज के छात्र हैं। बहुत जल्द ही आज के छात्रों को समझमें आ गया कि कालेज के अपूर्व इतिहास और नगर के इतिहास में, उनके आवास स्थानों का एक अटूट सम्बंध है। गांधी जी की नमक सत्याग्रह यात्रा के दौरान कालेज के प्रधानाचार्य ने सत्याग्रहियों को सुरक्षित पनाह दी थी। लाठी चार्ज करते पुलिसकर्मियों के लिए गेट बन्द कर दिए गए थे। शिक्षा के अलग-थलग संसार में अड़ोस-पड़ोस और उसकी राजनीति का यह एक अनोखा और अद्‌भुत समावेश था।

अगर इन ऐतिहासिक घटनाओं को व्यापक स्तर पर सामने लाया जाए तो विल्सन कालेज जैसे अन्य विरासती भवनों, इलाकों और शहरों से हमें उनके स्वर सुनाई देने लगेंगे जो वहाँ रहते थे और जिन्होंने वहां रहनेवाली आज की पीढ़ी की जीवनी शैली को आकार दिया है। नगर से एक विशेष रिश्ता स्थापित करने का हमें एक खास मौका भी मिलेगा। तब कोई इसकी कहानी को तोड़-मरोड नहीं सकेगा। हमें एक ऐसा रास्ता मिल जाएगा जिससे यह शहर फिर कभी कोई युद्धस्थल नहीं बना पाएगा।

अनुवादक : सरोज वशिष्ठ

■ ■ ■ ■ ■